राजस्थान में सूखा व अकाल : समस्या तथा समाधान

चित्रा मीणा

सहायक आचार्य भूगोल
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजगढ (अलवर) राज.

शोध सारांश :

राजस्थान की भौगौलिक स्थिति अकाल व सूखे का पर्याय बन गयी है राज्य में अकाल की भीषणता का अन्दाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि यहाँ 11 वी सदी में लगातार 12 वर्षों तक अकाल चला। यहाँ विभिन्न वर्षो में अकाल व सूखे की स्थिति रही है यह अकाल अनाज, पानी व चारा के रूप में त्रिकाल कहलाता है इससे न केवल मानव बल्कि पशु–पक्षी सभी प्रभावित होते है। सूखा शब्द का अर्थ है वर्षा की कमी। अतः जब–जब राज्य में वर्षा मी कमी होती है। तो मिट्टी में नमी के कम होने से वनस्पति व फसल का उत्पादन नहीं होता है। जिससे पानी अन्न व चारा भी कमी हो जाती है। यह स्थिति अकाल में परिवर्तित हो जाती है। पश्चिमी राजस्थान में सूखा व अकाल स्थायी क्षेत्र है। पूर्वी राजस्थान व दक्षिणी भाग में अस्थाई होता है। इस स्थिति के लिए प्राकृतिक व मानवीय दोनों कारक उत्तरदायी होते है प्राकृतिक कारकः स्थलाकृति, विषम जलवायु, वर्षा की अनियमितता व अनिश्चितता, वनों का अभाव आदि । मानवीय कारकः वनों का दोहन, भूजल दोहन, कृषि भूमि के उपयोग से अपरदन आदि। इस अकाल के अस्थायी व स्थायी दोनों समाधान सरकारी प्रयासों द्वारा ही किये जाते है। अब सरकार के प्रयासों से अकाल में मानव व पशुधन की मृत्यु बहुत कम होती है। अकाल की अपेक्षा अब अभावग्रस्त क्षेत्र ज्यादा पाये जाते हैं।

शब्द कुँजी : अकाल, सुखा, चारा, पानी, अनाज, वनविनाश, प्राकृतिक, आधारभूत सुविधाये, विषम जलवायु ।

प्रस्तावना – सूखा व अकाल राजस्थान के पर्याय है विषम जलवायु परिस्थितियों के कारण राज्य में थार मरूस्थल की उत्पत्तिि हुयी । यह मरू भूमि नाम सुनते ही अकाल का परिचय राजस्थान से हो जाता है। राज्यमें सुखाव अकाल लघु व दीर्घ अवधि के लिए राज्य के पूर्वी व पश्चिमी भाग में पड़ता रहता है। 1899 में उत्तरी भारत में सर्वाधिक भीषण अकाल पड़ा। यह अकाल विक्रम संवत वर्ष 1956 में पड़ा अतः यह 'छप्पनिया के अकाल' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। 2002–03 का अकाल भी सर्वाधिक भीषण रहा है। राज्य में लगातार तीन वर्ष अर्द्धअकाल व प्रति आठवें साल भंयकर अकाल आता है इसके लिए एक कहावत है–

पग पूंगल, धड़ कोटड़े, ठावों बाढ़मेर।
जाये लादे जोधपुर, ठाव जैसलमेर।

इसका अर्थ है कि अकाल के पैर पूंगल (बीकानेर) धड़ कोटड़ा (मारवाड़) में, भुजा बाढ़मेर में स्थायी रूप से रहती है लेकिन तलाशने पर यह जोधपुर में भी मिल जाता है जैसलमेर में तो स्थायी रूप से निवास करता है। ये कहावत ये सिद्ध करती है कि राजस्थान में अकाल व सूखा लघु व दीर्घ अवधि के लिए सदैव बना रहता है। सरकारी प्रयासों से अब अनाज, पानी, चारे की समस्या नहीं आती है। वरना प्राचीन समय में त्रिकाल की स्थिति के कारण मानव, पषु–पक्षी सभी काल के ग्रास बन जाते थे।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक आँकड़े साक्षात्कार व प्रश्नावली द्वारा तैयार किये गये हैं जबकि द्वितीयक आँकडे सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों से प्रकाशित का उपयोग किया गया है।

शोध परिकल्पनाः

1 यदि वर्षा की अनियमितता व अनिश्चितता होगी तो सूखा व अकाल की स्थिति रहेगी।

2. कृषि भूमि का आवश्यकता से अधिक दोहन तथा वनस्पति के विनाश से मृदा में नमी कम होगी जिससे सूखा व अकाल पड़ेगा।

शोध का उद्देश्य – राज्य में बार–बार पड़ने वाले सूखे व आकल का अध्ययन कर इसके दृष्परिणामों पर रोक लगाने हेतु लघु व दीर्घ उपायों को बताना । जनधन की हानि को अकाल में कम करना। साथ ही सरकारी योजनाओं को आमजन तक पहुँचाना है।

सूखा व अकाल – सूखा शब्द कम वर्षा का प्रतीक है सूखा लगातार होने से भूमि की नमी खत्म हो जाती है। तथा भू–जल भी नीचे चला जाता है इसके कारण वनस्पति का आवरण कम हो जाता है फसलों का उत्पादन नहीं होता है जब

वनस्पति, फसलें व जल की स्थिति खराब होने लगती है तो यह स्थिति अकाल का रूप ले लेती है। अकाल लगातार वर्षा की कमी का परिणाम होता है। कुछ मानवीय गतिविधियों का भी होता है। लेकिन वर्तमान में तीव्र यातायात साधनों के कारण अब दूसरे राज्यों या देशों से अन्न, जल, चारे का आयात कर अकाल को अभावग्रस्त क्षेत्रों में बदल देता है। तथा पषु, पक्षी, मानव काल के ग्रास राजस्थान में नहीं बनते है राजस्थान में जलवायु की विषमता, वनों के स्वरूपों, धरातलीय स्वरूप तथा अरावली श्रृंखला की दिषा मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने के कारण भी अकाल एवं सूखे की स्थिति रहती है। 1987 का अकाल 20 वीं सदी का सबसे भयंकर अकाल था। इस अकाल ने त्रिकाल का रूप धारण कर लिया था।

अकाल के प्रकार

1. अन्नकाल – इसमें कृषि उपज नहीं होती है।
2. जलकाल – इसमें पानी का अभाव रहता है।
3. त्रिकाल – इसमें अन्न, जल व चारे तीनों का अभाव होता है।

सन् 2009–10 में राजस्थान के 27 जिलें अकाल से प्रभावित हुए है। पश्चिमी राजस्थान के 12 जिले हनुमानगढ़, गंगानगर, बीकानेर, चूरू, सीकर, झुन्झुनूं नागौर, पाली, जोधपुर, जैसलमेर, बाढ़मेर, जालौर मरूस्थलीय जिले है। जो राज्य का 61 प्रतिशत क्षेत्रफल व 40 प्रतिशत जनसंख्या रखते है यहाँ करीब 66 प्रतिशत भूमि बंजर व अकृषित है। जो सूखे व अकाल का प्रतीक है। पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की मासिक व वार्षिक अनियमितता, भू–जल का अभाव, वाष्पीकरण की अधिकता, वनस्पति का अभाव सूखे व अकाल के विनाशकारी प्रभाव को उत्पन्न करते है । थार का मरूस्थल में अन्य मरूस्थलों की अपेक्षा अधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है जिस कारण अकाल का प्रभाव अधिक पड़ता है। अरावली प्रदेश में अधिक वर्षा व भू–जल की स्थिति अच्छी होने से कम सूखा व अकाल पड़ता है। हाड़ौती व पूर्वी राजस्थान में भी अच्छी वर्षा व नदियों के प्रवाह के कारण सूखे व अकाल का प्रभाव कम रहता है।

सूखे व अकाल के कारण – इस आपदा के लिए प्राकृतिक व मानवीय दोनों कारक जिम्मेदार है–

(1) प्राकृतिक कारक

1. शुष्क जलवायु – राज्य में कम वर्षा के कारण मरूस्थलीय स्थिति बन गयी है तापमान ग्रीष्मकाल में 480 से. ग्रे तक चला जाता है। औसत वर्षा 57 से.मी. है। वाष्पीकरण अधिक होता है। इस के कारण सूखे की स्थिति बन जाती है।

2. वर्षा की अनियमितता व अपर्याप्तता – राजस्थान के पश्चिम भाग में वर्षा 12 से.मी. जैसलमेर, बाढ़मेर में रहती है। अरावली के पश्चिमी भाग में औसत 50 से.मी. से कम वर्षा होती है अरावली प्रदेश में 50 से 70 से.मी.. मैदानी भागों में 60 से 85 से.मी. द. पूर्वी भाग में 90 से.मी. से अधिक रहती है। राज्य में यह वर्षा कभी कम व कभी अधिक होती है। इस अनिश्चितता के कारण सूखे व अकाल की स्थिति बन जाती है।

3. धरातलीय संरचना – राज्य में अरावली पर्वतमाला दक्षिण–पश्चिम से उत्तर – पूर्व की ओर है जो मानसूनी पवनों को रोकने में असमर्थ है जिस कारण राज्य में वर्षा नहीं होती है तथा अकाल की स्थिति बन जाती है। राज्य का पष्चिमी भाग मरूस्थलीय है।

4. नियतवाही नदियों का अभाव – राज्य मे सदानिरा नदियों का अभाव पाया जाता है। वर्षा काल में वर्षा का जल आने पर ये प्रवाहित होती है। अधिकांश भाग आन्तरिक प्रवाह क्षेत्र का है। चम्बल, बनास, लूनी, माही प्रमुख नदियाँ है । ग्रीष्मकाल में वर्षा जल का इन नदियों में अभाव हो जाता है। 5. मिट्टी अपरदन की समस्या – उपजाऊ कृषि भूमि का जल व वायु द्वारा अपरदन होने से बंजर भूमि में बदल जाती है। इससे नमी के अभाव से फसलों व चारे का उत्पादन न होने से सूखे की स्थिति बन जाती है।

6. वनस्पति आवरण का अभाव – सघन वनस्पति न होने के कारण भूमि की नमी सूख जाती है वर्षा भी नहीं होती है इस कारण से भी अकाल की स्थिति बन जाती है। अरावली क्षेत्र में वनों का खनिज दोहन के कारण अधिक विनाष हुआ है। जलाऊ लकड़ी के लिए वनस्पति, वृक्ष ग्रामीणों द्वारा काटे जाते है। मरूस्थल में अति पशुचारण से वनस्पति आवरण कम है। ये परिस्थितियाँ भी सूखे व अकाल को जन्म देती है। वन न केवल वर्षा को आकर्शित करते है बल्कि तापमान को नियन्त्रित करते है आर्द्रता बढ़ाते है यदि वन नहीं होगे तो वर्षा कम होगी तापमान बढ़ेगा जिस कारण सूखे व अकाल की स्थिति उत्पन्न होगी।

(2) मानवीय कारण– प्राकृतिक कारणों के अलावा मानवीय कारक भी शक्त रूप से सूखे व अकाल के लिए जिम्मेदार है वनों का तेजी से विनाश करने के कारण मृदा की नयी खत्म हो जाती है। जिस कारण फसल उत्पादन नहीं होता है। साथ ही वनस्पति आवरण कम होने से पशुओं के लिए चारा भी कम उत्पन्न होता है वर्षा जल का सही उपयोग न करना तथा भू–जल का आवष्यकता से अधिक दोहन करने से भी अकाल जैसी परिस्थितियाँ पैदा हो जाती है।

(3) आर्थिक कारण– अकाल का कारण आर्थिकता से भी जुड़ा है मख प्रदेश की स्थिति के कारण राज्य पिछड़ा हुआ है स्वतन्त्रता के पश्चात् अनेक योजनाएँ चलाई गयी लेकिन वे लघु समय के लिए थी उनका लाभ दीर्घकाल तक नहीं होने से हर दो–चार वर्ष पश्चात् सूखे व अकाल की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो जाती है।

राज्य का रियासती काल से पिछड़ा होना, गरीबी का पाया जाना। विदेशी व सामन्ती शोषण भी इन परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार रहे है। हमारे राज्य की कृषि मानसून पर आधारित है इस का प्रभाव लघु, कुटीर व ग्रामीण उद्योगों पर भी पड़ता है। ये उद्योग वैकल्पीक रोजगार के साधन है इस कारण अकाल व सूखे के समय स्थिति ओर भी गम्भीर हो जाती है जब–जब कृषि फसल की पैदावार कम होती है। हमारे किसान को आजीविका चलाने के साथ–साथ पशुपालन को रखना भी मुश्कील हो जाता है। सरकारे अकाल व सूखे के नाम पर सड़क निर्माण, पाठशाला, कुओं व तालाबों का निर्माण करवाती है। जो स्थायी समाधान नहीं है।

(4) राजनैतिक कारण – जब–जब भी सूखा व अकाल पड़ता है सरकार अस्थायी राहत कार्यों को चलाती है। इस कारण स्थायी व उत्पादक परिस्थितियों का निर्माण नहीं हो पाता है जिस कारण अकाल व सूखे भी समस्या बनी रहती है। सरकारी योजनाओं का पैसा सही दिशा में न लगकर गलत दिशा में व्यक्ति चला जाता है जब–जब सूखे व अकाल की समस्या राज्य में उत्पन्न होती है तो उसका रूप क्षेत्रीय हो जाता है प्रभावशाली लोग योजनाएँ व योजना के पैसे अपने क्षेत्र में ले जाते है। जिस कारण इस समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो पाता है अकाल जैसी समस्या का राजनीतिकरण हो जाता है राजनैतिक इच्छा शक्ति की कमी के कारण आज भी पश्चिमी राजस्थान में आधारभूत सुविधाओं का अभाव पाया जाता है। सूखे व अकाल का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धी इच्छा शक्ति से भी रहा है। राज्य सरकार की इस सम्बन्धी योजना मद की राशि राहत कार्यों में लगाना राजनीतिक इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है।

सूखे व अकाल के दुष्परिणाम : अकाल के कारण जैव जगत पर बहुत गम्भीर प्रभाव पड़ते हैं जो निम्न है –

1. बेरोजगारी– अकाल के कारण रोजगार खत्म होने से बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो जाती ।
2. खाद्यान्नव चारे की समस्या – जब–जब भी अकाल पड़ता है तो मनुष्य को खाद्यान्न व पशुओं को चारे के लिए झुझना पड़ता है। ये परिस्थितियाँ विशेषकर मरू प्रदेश में ओर भी गम्भीर हो जाती है।
3. उद्योगों के लिए कच्चे माल का संकट उत्पन्न हो जाता है।
4. श्रमिकों की कार्यक्षमता में कमी तथा जनता की क्रय–शक्ति कम हो जाती है।
5. वस्तुओं की माँग में कमी तथा औद्योगिक उत्पादन में गिरावट हो जाती है।

अकाल व सूखे के प्रभाव को कम करने के उपाय – अकाल व सूखे का सम्बन्ध वर्षा आधारित है, अतः इससे सम्बन्धी उपाय अल्पकालीन व दीर्घकालीन दोनों जरूरी है। इस अल्पकालीन व दीर्घकालीन समाधान के लिए सरकार द्वारा सरकारी कार्यक्रम जैसे सूखा संभाव्य क्षेत्र कार्यक्रम (1974–75 में राज्य के 11 जिलों में 32 खण्ड़ों में) चलाया गया, मरू विकास कार्यक्रम (1977–78 में 16 जिलों के 85 खण्डों में) चलाया गया, प्राकृतिक आपदा सहायता कोष (1990–91) का गठन, जलग्रहण विकास योजना (1995), मरूगोचर योजना (2003–04), प्राकृतिक आपदा कोष (1995) का गठन आदि क्रियान्वित किये गये है।

अल्पकालीन उपायः

1. खाद्यान्न का आयात करना तथा पशुओं के लिए चारा डिपो बना।
2. पेयजल व्यवस्था के लिए ट्यूबेल व नलकूप, कुऐं खोदना ।
3. सरकार की वार्षिक योजनाओं में बजट का अनिवार्य प्रावधान करना।
4. राहत कार्यों में जनसहयोग लेना ।
5. राहत कार्य क्षेत्रीय आधार पर संचालित करना।

दीर्घकालीन उपायः

1. वृक्षारोपण कार्यक्रम को सतत रूप से चलाना चाहिये जिससे वर्षा होगी, मिट्टी में नमी भी बनी रहेगी।
2. सिंचाई योजनाओं का विस्तार कर उपलब्ध जल संसाधनों का दीर्घकालीन व उचित प्रबन्धन करना।
3. कृषिवानिकी एवं चारा भूमि विकास कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना व मरुभूमि के विस्तार को रोकने के उपाय करना ।
4. आपदा प्रबन्धन विभाग को ओर अधिक सशक्त बनाया जावे।
5. चारागाह भूमि का ग्रामीण स्तर पर स्थायी प्रबन्धन किया जाना चाहिये।
6. स्वयं सहायता समूहों को प्रोत्साहित करना तथा सरकार की जबावदेही सुनिश्चित करना प्रशासन को हर समय देख–रेख करना अति आवश्यक है।
7. सरकारी योजनाओं का सही क्रियान्वयन कर अकाल व सूखे से छुटकारा पाया जा सकता है।

निष्कर्ष – राज्य की शुष्क व अर्द्धशुष्क जलवायु के कारण यहाँ पर वर्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। जब–जब मानसूर विफल होता है। सूखा व अकाल की स्थिति बन जाती है। अन्न, जल व चारे की कमी का प्रभाव मानव समुदाय के साथ पशुओं व जीव–जन्तुओं पर पड़ता है। सूखे व अकाल के प्रभाव को कम करने के लिए लघु व दीर्घकालीन उपाय किये जाते हैं। कुशल यातायात प्रबन्धन के कारण अकाल की अपेक्षा अभावग्रस्त क्षेत्र अधिक होते हैं। चारे. पानी व खाद्यान्नों का सरकार अन्य राज्यों या देशों से अर्थव्यवस्था कमजोर हो जाती है। प्रशासनिक दृष्टि से इसके स्थायी समाधान हेतु योजनाएँ बनाकर क्रियान्वित किया जाना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1. गुर्जर आर. के. शुक्ला लक्ष्मी (1998)ः 'जल संसाधन, पर्यावरण एवं लोग', पोईन्टर पब्लिकेशन, जयपुर।
2. साईवाल, स्नेह, 'राजस्थान का भूगोल', कॉलेज बुक हाउस – जयपुर।
3. शर्मा, एच. एस. शर्मा एम.एल., 'राजस्थान का भूगोल' पंचशील तं लं प्रकाशन, जयपुर
4. मोघे, बंसत (1984) : राजस्थान की मृदाऐं एवं प्रबन्धन, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. केन्द्रीय भू–जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर (2006) सूक्ष्म स्तरीय अध्ययन, भूमिगत जल परिदृष्य ।
6. Singh. A.L. (1985) : The Problems of waste lands in India.B.R.Poblishing company, Delhi.
7. Jha.B.N (1979): Problems of land utilization, classical publication, New Delhi.